कहानी माला – 22

अन्ताक्षरी

उधड़ी हुई कहानियाँ

● अमृता प्रीतम

उधड़ी हुई कहानियाँ

●अमृता प्रीतम

मैं और केतकी अभी एक-दूसरी से वाकिफ नहीं हुई थीं कि मेरी मुस्कराहट ने उसकी मुस्कराहट से दोस्ती गाँठ ली। मेरे घर के सामने नीम के और कीकर के पेड़ों में घिरा हुआ एक बाँध है। बाँध के दूसरी ओर सरसों और चने के खेत हैं। इन खेतो की बाई बगल में किसी सरकारी कॉलेज का एक बड़ा बगीचा है। इस बगीचे के एक नुक्कड़ पर केतकी की झोपड़ी हैं। बगीचे को सींचने के लिए पानी की छोटी-छोटी खाइयाँ जगह-जगह बहती हैं। पानी की एक खाई केतकी की झोपड़ी के आगे से भी गुज़रती है। इसी खाई के किनारे पर बैठी हुई केतकी को मैं रोज़ देखा करती थी। कभी वह कोई हँडिया या परात साफ कर रही होती और कभी सिर्फ पानी की अंजुलियाँ भर-भरकर चाँदी के गजरों से लदी हुई अपनी बाँहे धो रही होती। चाँदी के गजरों की तरह ही उसके बदन पर ढलती आयु ने मांस की मोटी-मोटी सलवटें डाल दी थीं। पर वह अपने गहरे साँवले रगं में भी इतनी सुन्दर लगती थी। उसके होंठों की मुस्काराहट में एक अजीब-सी भरपूरगी थी, एक अजीब तरह की संतुष्टि, जो आज के ज़माने में सबके चेहरों से गायब हो गई हैं। मैं रोज़ उसे देखती थी और सोचती थी कि उसने जाने कैसे यह भरपूरता अपने मोटे और साँवले होंठों में सँभालकर रख ली थी। मैं उसे देखती थी और मुस्करा देती थी। वह मुझे देखती और मुस्करा देती। और इस तरह मुझे उसका चेहरा बगीचे के सैकड़ों फूलों में एक-जैसा ही लगने लगा था। मुझे बहुत-से फूलों के नाम नहीं आते, पर उसका नाम मुझे मालूम हो गया था—'मांस का फूल'।

एक बार मैं पूरे तीन दिन उसके बगीचे में न जा सकी। चौथे दिन जब गई तो उसकी आँखें मुझसे इस तरह मिली जैसे तीन दिनों से नहीं, तीन सालों से बिछड़ी हुई हों।

"क्या हुआ बिटिया ! इतने दिन आई नहीं?"

''सर्दी बहुत थी अम्माँ ! बस बिस्तर में ही बैठी रही।''

''सचमुच बहुत जाड़ा पड़ता है तुम्हारे देश में।''

'' तुम्हारा कौन-सा गाँव है अम्माँ?''

''अब तो यहाँ झोपड़ी डाल ली, यही मेरा गाँव है।''

यह तो ठीक है, फिर भी अपना गाँव अपना गाँव होता है।''

''अब तो उस धरती से नाता टूट गया बिटिया ! अब तो यही कार्तिक मेरे गाँव की धरती है और यही मेरे गाँव का आकाश।''

''यही कार्तिक'', कहते हुए उसने झुग्गी के पास बैठे हुए अपने मर्द की तरफ देखा। आयु के कुबढ़ेपन से झुका हुआ एक आदमी ज़मीन पर तीले और रस्सियाँ बिछाकर एक चटाई बुन रहा था। दूर पड़े हुए कुछ गमलों में लगे हुए फूलों को सर्दी से बचाने के लिए शायद चटाइयों की आड़ देनी थी।

केतकी ने बहुत छोटे वाक्य में बहुत बड़ी बात कह दी थी। शायद बहुत बड़ी सच्चाइयों को अधिक विस्तार की ज़रुरत नहीं होती। मैं हैरानी से उस

आदमी की तरफ देखने लगी जो एक औरत के लिए धरती भी बन सकता था और आकाश भी।

''क्या देखती हो बिटिया ! यह तो मेरी 'बिरगं चिट्ठी' है।''

''बैरंग चिट्ठी!''

''जब चिट्ठी पर टिक्कस नहीं लगाते तो वह बिरगं हो जाती है।''

'' हाँ अम्मा। जब चिट्ठी पर टिकट नहीं लगी होती तो वह बैरंग हो जाती '' फिर उसको लेने वाला दुगुना दाम देता है।''

'' हाँ अम्माँ। उसको लेने के लिए दुगुने पैसे देने पड़ते हैं।''

'' बस यही समझ लो कि इसको लेने के लिए मैंने दुगुने दाम दिए हैं। एक तो तन का दाम दिया और दूसरा मन का।''

मैं केतकी के चेहरे की तरफ देखने लगी। केतकी का सादा और साँवला चेहरा ज़िन्दगी की किसी बड़ी फिलासफी से सुलग उठा था।

'' इस रिश्ते की चिट्ठी जब लिखते हैं तो गाँव के बड़े-बूढ़े इसके ऊपर अपनी

मोहर लगाते हैं।''

''तो तुम्हारी इस चिट्ठी के ऊपर गाँव वालों ने अपनी मुहर नहीं लगाई थी?''

'' नहीं लगाई तो क्या हुआ। मेरी चिट्ठी थी, मैंने ले ली। यह कार्तिक की चिट्ठी तो सिर्फ केतकी के नाम लिखी गई थी।''

'' तुम्हारा नाम केतकी है? कितना प्यारा नाम है। तुम बड़ी बहादुर औरत हो अम्माँ !''

'' मैं शेरों के कबीले में से हूँ।''

'' वह कौन-सा कबीला है, अम्माँ?''

'' यही जो जंगल में शेर होते हैं, वे सब हमारे भाई-बन्धु हैं। अब भी जब जंगल में कोई शेर मर जाए तो हम लोग तेरह दिन उसका मातम मनाते है। हमारे कबीले के मर्द लोग अपना सिर मुँडा लेते हैं, और मिट्टी की हँडिया फोड़कर मरने वाले के नाम पर दाल-चावल बाँटते हैं।''

'' सच्च अम्माँ।''

'' मैं चकमक टोला की हूँ । जिसके पैरों में कपिलधारा बहती है।''

'' यह कपिलधारा क्या है अम्माँ।''

'' तुमने गंगा का नाम सुना है?''

'' गंगा नदी?''

'' गंगा बहुत पवित्र नदी है, जानती हो न ?''

'' जानती हूँ।''

'' पर कपिलधारा उससे भी पवित्र नदी है। कहते हैं कि गंगा मइया एक साल में एक बार काली गाय का रूप धारण कर कपिलधारा में स्नान करने के लिए जाती है।''

'' वह चकमक टोला किस जगह है अम्माँ ?''

'' करंजिया के पास ।''

'' और यह करंजिया ?''

'' तुमने नर्मदा का नाम सुना है?''

" हाँ, सुना है।"

" नर्मदा और सोन नदी भी नज़दीक पड़ती हैं।"

" ये नदियाँ भी बहुत पवित्र हैं?"

" उतनी नहीं, जितनी कपिलधारा। एक बार जब धरती की सारी खेतियाँ सूख गई थीं, और लोग बेचारे उजड़ गए थे, तो उनका दुःख देखकर ब्रह्माजी रो पड़े थे। ब्रह्माजी के दो आँसू धरती पर गिर पड़े । बस जहाँ उनके आँसू गिरे वहाँ नर्मदा नदी और सोन नदी बहने लगीं । अब इनसे खेतों को पानी मिलता है।"

" और कपिलधारा से ?"

" इससे तो मनुष्य की आत्मा को पानी मिलता है। मैंने कपिलधारा के जल में इशनान किया और कार्तिक को अपना पति मान लिया।"

" तब तुम्हारी उमर क्या होगी अम्माँ ?"

" सोलह बरस की होगी ।"

"पर तुम्हारे माँ-बाप ने कार्तिक को तुम्हारा पति क्यों न माना?"

" बात यह थी कि कार्तिक की पहले एक शादी हुई थी। उसकी औरत मेरी सखी थी। बड़ी भली औरत थी। उसके घर चुंदरू-मुंदरू दो बेटे हुए दोनों ही बेटे एक ही दिन जनमे थे। हमारे गाँव का 'गुनिया' कहने लगा कि यह औरत अच्छी नहीं है। इसने एक ही दिन अपने पति का संग भी किया था और अपने प्रेमी का भी। इसीलिए एक की जगह दो बेटे जनमे हैं।"

" उस बेचारी पर इतना बड़ा दोष लगा दिया ?"

" पर गुनिया की बात को कौन टालेगा। गाँव का मुखिया कहने लगा कि रोपी को प्रायश्चित करना होगा। उसका नाम रोपी था। वह बेचारी रो-रोकर आधी रह गई।"

" फिर?"

" फिर ऐसा हुआ कि रोपी का एक बेटा मर गया। गाँव का गुनिया कहने लगा कि जो बेटा मर गया, वह पाप का बेटा था, इसीलिए मर गया ।"

"फिर?"

" रोपी ने एक दिन दूसरे बेटे को पालने में डाल दिया और थोड़ी दूर जाकर महुए के फूल डलियाने लगी। पास की झाड़ी से भागता हुआ एक हिरन आया। हिरन के पीछे शिकारी कुत्ता लगा हुआ था। शिकारी कुत्ता जब पालने के पास आया तो उसने हिरन का पीछा छोड़ दिया और पालने में पड़े हुए बच्चे को खा लिया ।"

"बेचारी रोपी"

"अब गाँव का गुनिया कहने लगा कि जो पाप का बेटा था उसकी आत्मा हिरन की जून में चली गई। तभी तो हिरन भागता हुआ उस दूसरे बेटे को भी खाने के लिए पालने के पास आ गया।"

"पर बच्चे को हिरन ने तो कुछ नहीं कहा था। उसको तो शिकारी कुत्ते ने मार दिया था।"

"गुनिए की बात को कोई नहीं समझ सकता बिटिया ! वह कहने लगा कि पहले तो पाप की आत्मा हिरन में थी, फिर जल्दी से कुत्ते में चली गई। गुनिया लोग बात की बात में मरवा डालते हैं। बसाई का नन्दा जब शिकार करने गया था तो उसका तीर किसी हिरन को नहीं लगा था। गुनिया ने कह दिया कि ज़रुर उसके पीछे उसकी औरत किसी गैर मरद के साथ सोई होगी, तभी तो उसका तीर निशाने पर नहीं लगा। नन्दा ने घर आकर अपनी औरत को तीर से मार दिया।"

"अरे !"

" गुनिया ने कार्तिक से कहा कि वह अपनी औरत को जान से मार डाले। नहीं मारेगा तो पाप की आत्मा उसके पेट से फिर जनम लेगी और उसका मुख देखकर गाँव की खेतियाँ सूख जाँएगी।"

"फिर?"

"कार्तिक अपनी औरत को मारने के लिए सहमत न हुआ। इससे गुनिया भी नाराज़ हो गया और गाँव के लोग भी।"

"गाँव के लोग नाराज़ हो जाते हैं तो क्या करते हैं?"

"लोग गुनिया से बहुत डरते हैं। सोचते हैं। कि अगर गुनिया जादू कर देगा तो सारे गाँव के पशु मर जाएँगे। इसलिए उन्होने कार्तिक का हुक्का-पानी बन्द कर दिया।"

"पर वे यह नहीं सोचते थे कि अगर कोई इस तरह अपनी औरत को मार देगा तो वह खुद जिन्दा कैसे बचेगा?"

"क्यों, उसको क्या होगा?"

" उसको पुलिस नहीं पकड़ेगी!"

"पुलिस नहीं पकड़ सकती। पुलिस तो तब पकड़ती है जब गाँव वाले गवाही देते हैं। पर जब गाँव वाले किसी को मारना ठीक समझते हैं तो पुलिस को पता नहीं लगने देते।"

"फिर क्या हुआ?"

"बेचारी रोपी ने तगं आकर महुए के पेड़ से रस्सी बाँध ली और अपने गले

में फाँसी डालकर मर गई।"

"बेचारी बेगुनाह रोपी।"

"गाँव वालों ने समझा कि बात खत्म हो गई। पर मुझे मालूम था कि बात खत्म नहीं हुई, क्योंकि कार्तिक ने अपने मन में ठान लिया था कि वह गुनिया को जान से मार डालेगा। यह मुझे मालूम था कि गुनिया जब मर जाएगा तो राक्षस बनेगा।"

"वह तो जीते-जी राक्षस था।"

"जानती हो, राक्षस क्या होता है?"

"क्या होता है?"

"जो आदमी दुनिया में किसी को प्रेम नहीं करता, वह मरकर अपने गाँव के दरख्तों पर रहता है। उसकी रूह काली हो जाती है और रात को उसकी छाती से आग निकलती है। वह रात को गाँव की जवान लड़कियों को डराता है।"

"फिर?"

"मुझे उसके मरने का तो गम नहीं था। पर मैं जानती थी कि कार्तिक ने अगर उसको मार दिया तो गाँव वाले कार्तिक को उसी दिन तीरों से बींध देंगे।"

"फिर?"

"मैंने कार्तिक को कपिलधारा में खड़े होकर वचन दिया कि मैं उसकी औरत बनूँगी। हम दोनों इस देश से भाग जाएँगे। मैं जानती थी कि कार्तिक उस देश में रहेगा तो किसी दिन गुनिया को ज़रुर मार देगा। अगर वह गुनिया को मार देगा तो गाँव वाले उसको मार देंगे।"

"तो कार्तिक को बचाने के लिए तुमने अपना देश छोड़ दिया?"

"जानती हूँ, वह धरती नरक होती है जहाँ महुआ नहीं उगता। पर क्या करती? अगर वह देश न छोड़ती तो कार्तिक ज़िन्दा न बचता, और जो कार्तिक मर जाता तो वह धरती मेरे लिए नरक बन जाती। उसके साथ देश-देश घूमती रही। फिर हमारी रोपी भी हमारे पास लौट आई।"

"रोपी कैसे लौट आई?"

"हमने अपनी बिटिया का नाम रोपी रख दिया था। यह भी मैंने कपिलधारा में खड़े होकर अपने मन से वचन लिया था कि मेरे पेट से जब कभी कोई बेटी होगी, मैं उसका नाम रोपी रखूँगी। मैं जानती थी कि रोपी का कोई कसूर नहीं था। जब मैंने बिटिया का नाम रोपी रखा तो मेरा कार्तिक बहुत खुश हुआ।"

"अब तो रोपी बहुत बड़ी होगी?"

"अरी बिटिया ! अब तो रोपी के बेटे भी जवान होने लगे! बड़ा बेटा आठ बरस का है और छोटा छः बरस का। मेरी रोपी यहाँ के बड़े माली से ब्याही है। हमने दोनों बच्चों के नाम चुंदरु-मुदरु रखे है।"

" वही नाम जो रोपी के बच्चों के थे?"

" हाँ वही नाम रखे हैं। मैं जानती हूँ उनमें से कोई भी पाप का बच्चा नहीं था।"

" मैं कितनी देर केतकी के चेहरे की तरफ देखती रही। कार्तिक की वह कहानी, जो किसी गुनिए ने अपने निर्दय हाथों से उधेड़ दी थी, केतकी अपने मन के

सुच्चे रेशमी धागे से उस उधड़ी हुई कहानी को फिर से सी रही थी। यह एक कहानी की बात है। और मुझे भी मालूम नहीं, आपको भी मालूम नहीं कि दुनिया के ये 'गुनिए' दुनिया की कितनी कहानियों को रोज़ उधेड़ते हैं।

आपके जवाब के इन्तजार में--
शिवसिंह नयाल,
'अलारिप्पु', बी-६/६२, पहली मंजिल, सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली-११००२६. दूरभाष : ६०६३२७

ज्योति लेजर टाइपसेटिंग